॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥ ॥ श्रीजानकीवल्लभो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीजानकीवल्लभस्तवः

रचयिता—

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥ ॥ श्रीजानकीवल्लभो जयति ॥

※ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ※

श्रीजानकीवल्लभस्तवः

रचयिता —

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-
पीठाधीश्वर **श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य**
श्री "श्रीजी" महाराज

प्रकाशक —

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

श्रीरामजानकी-विवाह-महोत्सव

वि० सं० २०५४ श्रीनिम्बार्काब्द ५०९३

-:- समर्पणम् -:-

ग्रन्थोऽयमर्प्यते प्रीत्या सीतापरिणयोत्सवे ।
सीतारामपदाम्भोजे "जानकीवल्लभस्तवः" ।।

विद्या-बलविहीनेन केवलं तेऽनुकम्पया ।
व्यरचि यादृशः सोऽयं गृहाण कमलेक्षण ! ।।

श्रीरामजानकी-विवाह-महोत्सवः
मार्गशीर्ष-शुक्ल ५ शुक्रवासरः
वि० सं० २०४३
दिनांक ५-१२-८६

श्रीयुगलपदाब्जमकरन्दकामः—
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

स्तवों द्वारा माधुर्योपासना

अहैतुक कृपासिन्धु युगलकिशोर श्यामाश्याम के अन्तरङ्ग-लीलामाधुर्य का आस्वादन उन्हीं के अनन्य कृपाभाजन अन्तरङ्ग परिकर ही कर पाते हैं। उस अलौकिक माधुर्य रस का वर्णन किसी प्राकृत साधन से सम्भव नहीं है। वह कृपासाध्य वस्तु है। माधुर्यसिन्धु के विन्दु मात्र से यह सारा संसार आनन्दित हो उठता है। माधुर्यसिन्धु के विन्दु की उपलब्धि भी सद्गुरु के बिना नहीं हो सकती। अतः माधुर्य रसपिपासु साधकों के लिये सद्गुरु का समाश्रयण ही मुख्य साधन है। परम दयामय पूर्वाचार्यवर्यों ने जागतिक जीवों के कल्याण हेतु दार्शनिक विवेचना के साथ मङ्गलमय स्तोत्रों तथा वाणीग्रन्थों के माध्यम से माधुर्य उपासना का मार्ग बतलाया है।

उन्हीं पूर्वाचार्यचरणों की सरणि का अनुसरण करते हुये वर्तमान आचार्यचरण अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्का-चार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने काव्यमयी भाषा में अपनी अनवरत साधना से अनेक स्तोत्र-रत्नों का सृजन किया।

संस्कृत के वार्णिक छन्दों के अतिरिक्त गेय पदों का यत्र-तत्र विन्यास स्वर्णालङ्कारों में हीरा की छवि व्यक्त करता है।

इन संस्कृत स्तवों की संकलित पद्य संख्या एक सहस्र (एक हजार) हुई है। इस सहस्त्र संख्या की पूर्ति मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र के आराधन रूप "श्रीजानकीवल्लभस्तव" से हुई है।

पूज्य आचार्यश्री की बहुमुखी प्रतिभा ने अनन्तकल्याण गुण सागर भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अनन्त विभूतियों का वर्णन करके श्रीनिम्बार्काभिमत समन्वयात्मक द्वैताद्वैत दर्शन का दिग्दर्शन कराया है। अतः किसी भी साधक को भ्रमित नहीं होना चाहिये। "श्रीजानकीवल्लभस्तव" पूज्य आचार्यश्री की अभिनव रचना है। इसका पठन-मनन जानकीजीवन श्रीरामभद्र के मङ्गलमय चरणारविन्द में अनवरत अनुरक्ति एवं भक्ति की वृद्धि कराने वाला है।

विनीत—

पं० वासुदेवशरण उपाध्याय निम्बार्कभूषण

व्या० सा० वेदान्ताचार्य

प्राचार्य—

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) जि० अजमेर

॥ श्रीसीतारामचरणकमलेभ्यो नमः ॥

अभिनव - स्तवराज

अनन्तकरुणावरुणालय-सर्वसौन्दर्य-माधुर्य-ऐश्वर्य सुधासिन्धु परात्पर सर्वशक्तिमान् अखिलगुणगणनिलय श्रीराघवेन्द्रप्रभु जब जीवों पर द्रवीभूत होते हैं तब आचार्य के रूप में प्रकट होकर भवाटवी में पड़े हुये दीन हीन प्राणियों को अपनी दिव्यातिदिव्य रसपूर्ण मधुर वाणी के द्वारा जीवों को भगवत्-उन्मुख करते हैं। उसी प्रकार इस वर्तमान समय पर वैष्णव-चतुष्टय सम्प्रदाय में श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय के अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर के रूप में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज विराजमान हैं।

जिनकी मधुर ललित उपासना एवं सदुपदेश के द्वारा अनन्त प्राणियों का कल्याण हो रहा है। जिनके द्वारा अनेक सुदिव्य ग्रन्थों का सुमधुर ललित देववाणी में सृजन हुआ है। जिनको पढ़-पढ़ कर भक्त रसिकजन भगवत्प्रेमसिन्धु में निमग्न होते हैं। यह "श्रीजानकीवल्लभस्तव" ग्रन्थ अद्भुत सुललित अल्प-समय में ही निर्मित होकर प्रकाशित हुआ है। इसके श्रवण, पठन, मनन करने वालों की अवश्य ही राजीवलोचन नयनाभिराम राघवेन्द्र सरकार भगवान् श्रीराम के युगलचरणारविन्दों में अनन्य अनुराग होगा।

सरस मधुर अति दिव्यतम श्रीरामस्तवराज ।
कहत सुनत समुझत बसत उरमहि कौशलराज ॥

भावुक:—

कौशलकिशोरदास मानसकिंकर (रामायणी)

श्रीहनुमानजी का मन्दिर छोटी गुफा-जानकी कुण्ड, चित्रकूट (म.प्र.)

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

-:- स्वाराध्य-प्राप्ति में स्तव-परम्परा -:-

यद्यपि भगवान् श्रीराम तथा भगवान् श्रीकृष्ण तत्त्वतः एक ही स्वरूप में सुशोभित हैं तथापि उपासना एवं लीला-भेद से इन उभय श्रीयुगल में विभेद भी स्वाभाविक है। राजीवलोचन नयनाभिराम राघवेन्द्रसरकार भगवान् श्रीराम मर्यादापुरुषोत्तम हैं तो आनन्दकन्द नन्दनन्दन नवाम्बुदानीकमनोहर सर्वेश्वर श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण लीलापुरुषोत्तम हैं। ये दोनों ही श्रीयुगल निरतिशय-सौन्दर्य—माधुर्य-लावण्य—कारुण्य--मार्दवादिनिखिल-कल्याणगुणगणनिलय एवं सर्वनियन्ता हैं, सर्वेश्वर हैं, सौशील्य-सौगन्ध्य-सौकुमार्यादि तथा सर्वनियन्तृत्व-सर्वात्मत्व-सर्वव्यापकत्व-स्वतन्त्रसत्व-सर्वाधारत्वादिदिव्यानन्तगुण-समूह से समलङ्कृत समान हैं। ये श्रीयुगल परमकृपालु परमदयालु एवं अनुग्रह विग्रह-रूप हैं, केवल लीला-विभेद से ही एकमात्र पार्थक्य-बोधक हैं। यथार्थ में हैं ये एक ही तत्त्व और जिस तत्त्व को समग्र सुरवृन्द तथा अमलात्मा महात्मा परमहंस तपस्वी योगीजन भी अनन्त-अनन्त काल तक तपः परायण होकर इदमित्थं रूप से नहीं जान पाते। "यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः" के अनुसार वे अखिलान्तरात्मा श्रीसर्वेश्वर जिन पर कृपा-कटाक्ष करदें वे ही आपके अप्राकृत दिव्य सच्चिदानन्दमय स्वरूप को पहचान सकते हैं।

शरणागत भक्त इनकी विविध शास्त्रीय विधा से उपासना आराधना एवं चिन्तन स्मरण करते हैं। आराधना की नाना

सरणियों में मधुर स्तवों द्वारा इनका अनुस्मरण सद्यः फलप्रद होता है। स्तवों से अपने स्वाराध्य के चिन्तन की अति प्राचीन परम्परा है। वेदों में पुराणों में तन्त्रादि ग्रन्थों में सर्वत्र श्रीहरि का स्तवन, अभिचिन्तन स्तवों द्वारा किया गया है। इसी परम्परानुसार श्रीसर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् की मङ्गलमयी दिव्य प्रेरणा से स्तवात्मक कतिपय ग्रन्थों की रचना उन्हीं की कृपा का यह प्रसाद है। प्रस्तुत "श्रीजानकीवल्लभस्तव" भी अनन्तकृपासिन्धु भगवान् श्रीसीताराम की परमानुकम्पा का ही प्रसाद रूप है। इस लघु कलेवरात्मक स्तव में इन्हीं युगलकिशोर श्रीजानकीवल्लभलाल का यथामति उन्हीं की निर्हेतुकी प्रेरणानुसार स्तवन किया गया है। प्रस्तुत रचना में सरलता का विशेष ध्यान रखा गया है जिससे साधारण संस्कृतज्ञ एवं हिन्दीभाषाविज्ञजन भी सहज में अर्थावबोध कर सके। सभी के हितार्थ इसका हिन्दी भावार्थ भी कर दिया गया है। विभिन्न उत्सव-महोत्सवों की अत्यधिक व्यस्तता वश स्वल्प समय में ही अति शीघ्रता में इस स्तव का प्रणयन हुआ और साथ ही साथ इसका प्रकाशन भी जो उन्हीं श्रीहरि की कृपा का ही फल है। सम्भव है रसिक मनीषी सन्त महानुभाव एवं भावुक श्रद्धालु भगवद्भक्तजन इससे अवश्य ही लाभान्वित होंगे, ऐसा हमें विश्वास हैं।

श्रीयुगलकृपाकाम:—

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

द्वारा प्रणीत—

"श्रीस्तवरत्नाञ्जलि"—उत्तरार्द्ध में—

स्तोत्र भी पठनीय एवं मननीय है। भावुक महानुभावों को "श्रीस्तवरत्नाञ्जलि" प्राप्त कर इन स्तोत्रों के स्वाध्याय से अवश्य ही लाभान्वित होना चाहिये।

✻ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ✻ ✻ श्रीजानकीवल्लभो जयति ✻

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज
द्वारा विरचित—

श्रीजानकीवल्लभस्तवः

राधासर्वेश्वरं वन्दे सखीपुञ्जै र्विशोभितम् ।
वृन्दारण्ये महाधाम्नि श्रीकालिन्द्यास्तटस्थिते ।।१।।

अयोध्या-वसुधा-धाम्नि सरयू-पुलिने प्रिये ।
विहरन्तं भावयामि जानकीवल्लभं प्रभुम् ।।२।।

श्रीमद्-हंसं प्रभुं वन्दे मन्त्रराजप्रदायकम् ।
स्मरामि नितरां स्वान्ते सनकादिप्रपूजितम् ।।३।।

नमामि परमाचार्यान्कुमारान्नारदं मुनिम् ।
श्रीनिम्बार्कं कृपाकोषं पूर्वाचार्यान्वरान्मुहुः ।।४।।

प्रणम्याऽस्मद्गुरुं देवं निम्बार्कपीठदेशिकम् ।
सश्रद्धं रच्यते भक्त्या जानकीवल्लभस्तवः ।।५।।

(१)

विधि-शम्भु-पुरन्दरार्चितं सरयूतीरविहारतत्परम् ।
सततं पवनात्मजाऽञ्चितं भज रामं जनकात्मजाप्रियम् ॥

(२)

भरताग्रजमब्जलोचनं भवबाधाहरमीप्सितप्रदम् ।
भवमोदकरं भवेश्वरं भजनीयं प्रणमामि राघवम् ॥

(३)

शरणागत-भक्तिदं प्रभुं सुखदं श्यामलरूपमद्भुतम् ।
शरशोभितहस्तपङ्कजं रमणीयं प्रणमामि राघवम् ॥

(४)

अरविन्दमुखं गुणाकरं नितरां लक्ष्मणसेवितं शुभम् ।
असुरावरमोहनिग्रहं समुपास्यं भुवि राममाश्रये ॥

(१)

ब्रह्मा-शिव आदिक देव-वृन्दों द्वारा परिपूजित, श्रीसरयू के पावन तट पर विहार करने वाले, पवनपुत्र भक्तश्रेष्ठ श्रीहनुमान-जी से सर्वदा सेवित, जनकनन्दिनी श्रीजानकीजी को जो अति-प्रिय लगते हैं ऐसे नयनाभिराम भगवान् श्रीराम का निरन्तर भजन करना हम सभी के लिए परम अभीष्ट है ।

(२)

संसार की भीषण बाधाओं का शमन करने वाले तथा भव अर्थात् संसार को सुखमय करने में तत्पर अथवा आशुतोष भग-वान् श्रीशिव को परमानन्द प्रदान करने वाले, भवेश्वर अर्थात् भगवान् श्रीशिव के भी ईश्वर किंवा समस्त जगत् के ईश्वर श्री भरतजी के ज्येष्ठ भ्राता विकसित कमलनयन परम आराधनीय भगवान् श्रीराम को प्रणाम करते हैं ।

(३)

शरणागत भक्तजनों के प्रति अपनी प्रेमलक्षणा पराभक्ति को प्रदान करने में तत्पर, परमसुखदायक अतीव विलक्षण श्याम-स्वरूप से परम सुशोभित, अत्यन्त सुन्दर धनुष को जिन्होंने अपने हस्त-कमल में धारण कर रखा है, ऐसे रमणीय अर्थात् परमाह्लाद रूप अतिसुभग भगवान् श्रीराघवेन्द्र सरकार को नमन करते हैं ।

(४)

विकसित कमल के समान जिनका मनोहर श्रीमुख है, अनन्त गुणों के सागर, अपने अनुज श्रीलक्ष्मणजी से सदा सेवित अर्थात् परम शोभायमान है, परम कल्याणकारी, दैत्य समूह तथा विकृत कर्म परायण जनों पर अनुशासन पूर्वक निग्रह करने वाले, इस संसार में परम उपासनीय ऐसे भगवान् श्रीराम का आश्रय लेते हैं ।

(५)

अभिलाघहरं वरं परं मुनिवृन्दारकवृन्दसंस्तुतम् ।
नर-वानर-वीररञ्जितं हृदि रामं स्मरणीयमीश्वरम् ।।

(६)

नवनीरददिव्यसन्निभं नवसिंहासनपीठराजितम् ।
नवचन्दन-कुङ्कुमाऽङ्कितं नवरूपं रघुनाथमाश्रये ।।

(७)

इह दाशरथिं भजे सदा सदयोध्याभुवि सीतया समम् ।
विहरन्तमुदारमानसं रघुवंशाधिपतिं सनातनम् ।।

(८)

प्रणमामि परात्परं हरिं कमनीयं खलु राममव्ययम् ।
मुनिमानसमन्दिरे स्थितं करुणासिन्धुमनन्तमच्युतम् ।।

(९)

मणिमौक्तिकहारसुन्दरं तुलसीपत्रसुपूजितं सुरैः ।
धृतमञ्जुलहेमकुण्डलं रघुनाथं मनसा भजाम्यहम् ।।

(५)

मुनिजन एवं देववृन्दों द्वारा जिनका विभिन्न रूप से स्तवन होता है, मानव एवं वीर-वानर सेना से अति सुशोभित, अनन्त-अनन्त पाप-पुञ्जों का हरण करने वाले, अतीव श्रेष्ठ सर्वदा अपने हृदय से जिनका स्मरण किया जाय ऐसे सर्वेश्वर भगवान् श्रीराम सर्वदा स्मरणीय है।

(६)

नवीन मेघ के समान दिव्य स्वरूप को धारण किये, नव-सिंहासन पर विराजमान मङ्गलरूप नवीन चन्दन-कुंकुमादि धारण से परम सुभग प्रतिक्षण नवस्वरूप भगवान् रघुनाथ श्रीराम का सर्वदा आश्रय लेते हैं।

(७ (

इस भूतल पर परम सुरम्य श्रीअयोध्याजी की सुन्दर धरा पर श्रीजानकीजी सहित विहार करते हुए सनातनरूप परम उदार मना रघुवंशाधिपति दशरथनन्दन भगवान् श्रीराम का भजन करते हैं।

(८)

मुनीश्वरजनों के मन में सदा विराजित अर्थात् मुनिजन जिनको अपने हृदय में सर्वदा धारण किये उन्हीं का स्मरण करते हैं। अव्यय, अनन्त, अच्युत-स्वरूप परम करुणासागर परात्पर अतिमनोहर श्रीहरि भगवान् राम को प्रणाम करते हैं।

(९)

नाना उज्ज्वल मणियों विविध प्रकार के सुन्दर मोतियों के मनोहर हार से जिनके दर्शन अत्यन्त आह्लादकारक है, स्वर्ण-कुण्डलों से अति सुशोभित, देवगण जिनकी तुलसी-पत्र से अर्चना करते हैं ऐसे रघुनाथ भगवान् सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्र का अपने हृदय से भजन करते हैं।

(१०)

मुकुटप्रभया विभूषितं प्रियसीतापतिमुत्तमं प्रियम् ।
मुनिभिः सततं समीडितं सकलेशं प्रभजामि श्रद्धया ।।

[११]

मुदितं नवकल्पभूरुहं करुणासिन्धुमनारतं भजे ।
सुख-शान्तिकरं शुभालयं जगदीशं प्रभुराममच्युतम् ।।

(१२)

सनकादिक-नारदादिकैः परिसेव्यं रसिकैश्च सादरम् ।
विमलै र्भगवत्परायणैः प्रभजे श्रीरघुनन्दनं हृदा ।।

(१३)

विबुधै-र्बुध-किन्नरै-र्नरै-र्हरिपादाम्बुजचिन्तने रतैः ।
प्रणुतं समुदञ्च सादरं मनसा श्रीप्रभुराममाश्रये ।।

(१४)

हरिभक्तिभरैश्च भावुकैः सरसै र्भागवतै र्निषेवितम् ।
सुभगोत्तमकर्मतत्परैः प्रभजे दाशरथिं दयानिधिम् ।।

(१५)

पवनात्मजचित्तसंस्थितं श्रुतिमन्त्रार्थकदम्बवर्णितम् ।
परिपूर्णाननं सुरेश्वरं मिथिलेशात्मज सुतर्पितं भजे ।।

(१०)

आप्तकाम मुनिजन जिनकी अनवरत विविध स्तवों द्वारा स्तुति करते हैं, मनोहर मुकुट की दिव्य कान्ति से परम सुशोभित, परमोत्तम प्रिय सीतापति सर्वेश्वर भगवान् श्रीराम का श्रद्धा पूर्वक भजन करते हैं।

(११)

वाञ्छाकल्पतरु, करुणासागर, शुभस्वरूप, सुख-शान्ति प्रदान करने वाले सदा प्रसन्न मङ्गलधाम जगदीश्वर अच्युतरूप भगवान् श्रीराम का निरन्तर भजन करते हैं।

(१२)

श्रीसनकादि-नारद प्रभृति महर्षि-देवर्षिजनों से तथा श्री-भगवत्परायण निर्मल रसिकजनों से सादर परिसेवित रघुनन्दन भगवान् श्रीराम का हृदय से भजन करते हैं।

(१३)

श्रीप्रभु के युगल चरणकमलों में निरत रहने वाले देवकिन्नर-विद्वज्जनों से अभिवन्दित भगवान् श्रीराम का प्रसन्नता पूर्वक सादर अपने मन से आश्रय लेते हैं।

(१४)

सुन्दर उत्तम कर्म-परायण श्रीहरिभक्तिनिष्ठ परम भागवत सरस भावुकजनों से संसेवित दयासागर दशरथनन्दन भगवान् श्रीराघवेन्द्र-सरकार श्रीराम का भजन करते हैं।

(१५)

वेद-मन्त्र समूह से अभिवर्णित, पवनतनय श्रीहनुमानजी के पावन मानस में निरन्तर विराजित परिपूर्णतम सुरेश्वर सीतापति भगवान् श्रीराम का भजन करते हैं।

(१६)

भवकारणकारणं विभुं सरयूनीरसुपूजितं जनैः ।
भरताग्रजमच्युतं प्रभुं स्वकचित्ते खलु भावयेऽनिशम् ॥

(१७)

यदनुग्रहवर्षणेन वै लभते तस्य सुदर्शनं प्रियम् ।
परमाप्तजनैः स्तुतञ्च तं प्रणमामि प्रियराघवं हरिम् ॥

(१८)

अखिलामृतसारसागरं कमनीयाम्बुजलोचनं प्रभुम् ।
प्रणमामि च जानकीपतिं नवसौन्दर्यमहासुधाकरम् ॥

(१९)

समुपासकसेवया सदा मुदितं श्रीसरयूतटेऽञ्चितम् ।
प्रतिपालकपालकं भजे रघुनाथं भवनाथमीश्वरम् ॥

(१६)

श्रद्धालु भावुकजनों द्वारा सरयूजी के परम पावन सुन्दर निर्मल जल से जिन श्रीहरि का समर्चन किया जाता है, सर्वव्यापक इस चेतनात्मक समस्त जगत् के जो परम कारण अर्थात् एकमात्र आधार रूप है। श्रीभरतलालजी के ज्येष्ठ भ्राता अच्युत भगवान् श्रीराम के मङ्गलमय स्वरूप की अपने मन में निरन्तर भावना करते हैं।

(१७)

जिनके दिव्य कृपा-कटाक्ष से उनके मङ्गलमय परम मनोहर दर्शन हो सकते हैं, उत्तमश्लोक पुण्यस्वरूप श्रेष्ठ महापुरुषों द्वारा जिन श्रीप्रभु का सुन्दर स्तवन किया जाता है ऐसे परमप्रिय श्री हरि सर्वान्तरात्मा राघवेन्द्र श्रीराम को प्रणाम करते हैं।

(१८)

सम्पूर्ण जगत् के जितने भी यावन्मात्र अमृत एवं अमृतमय पदार्थ है उन सभी के सार के जो परम सागर है, विकसित सुन्दर कमल के समान जिनके नेत्र युगल हैं। नवनवायमान सौन्दर्य के महासिन्धु रूप श्रीजानकीपति भगवान् श्रीराम को प्रणाम करते हैं।

(१९)

पुण्य सलिला श्रीसरयू के परम सुरम्य तट पर अतीव सुशोभित आराधनानिरत उपासक जनों की सेवा से सदा प्रसन्न, इस विविधरूपात्मक जगत् के परिपालन करने वाले देवताओं के भी जो परम पालक है, आशुतोष भूतभावन भगवान् शंकर के भी परम नाथ है, जो परमेश्वर हैं ऐसे रघुकुल के नाथ भगवान् श्रीराम का भजन करते हैं।

(२०)

अभिरामाऽऽश्रवने विराजितं मिथिलेशसुतासुखप्रदम् ।
सततं स्वकभ्रातृशोभितं मनसा श्रीरघुनाथमाश्रये ।।

(२१)

रसभावभरैर्मुनीश्वरैः परिगीतं कलनिस्वनै र्वरैः ।
श्रुतिशास्त्रमहाबुधैः सदा प्रभजे श्रीरसधामराघवम् ।।

(२२)

नियमेन दृढानुशासने परिलग्नं पथदर्शकं प्रभुम् ।
विधिशास्त्रपथप्रकाशकं परमं श्रीरघुनन्दनं भजे ।।

(२३)

अथ मञ्जुलभावनिर्भरै र्भरताद्यैश्च सहोदरै र्युतम् ।
विमलैः प्रबलै र्निषेवितं प्रियरामं सततं विभावये ।।

(२४)

भवचक्रनिवारकं हरिं प्रणताऽऽर्ताऽऽर्तिहरं कृपानिधिम् ।
सुखबीजमहो रमेश्वरं प्रणमामि प्रणतप्रियं प्रभुम् ।।

(२०)

अत्यन्त रमणीय ग्राम के सुन्दर तरुवरों के दिव्य चित्ताकर्षक उपवन (बगीचा) में विराजमान, श्रीजानकीजी को सर्वदा आनन्द प्रदान करने वाले, अपने भ्रातृजन से सुशोभित रघुनाथ भगवान् श्रीराम का मनसा, वाचा, कर्मणा समाश्रय लेते हैं ।

(२१)

जिनकी मधुर वाणी है जो श्रेष्ठ हैं रसमय जिनका दिव्य भाव है ऐसे मुनिजनों से तथा वेद शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा जिन श्रीहरि की लोकोत्तर महिमा का गान होता है, एवं विध रस के अर्थात् आनन्द के एकमात्र आधार रूप श्रीराघवेन्द्र का भजन करते हैं ।

(२२)

श्रुति-स्मृति शास्त्र विधानानुसार समस्त प्रजा पर दृढ़तम अनुशासन परायण, सन्मार्ग के उद्बोधक, विधिपरक शास्त्रों के मार्ग को बताने वाले ऐसे परम प्रभु रघुनन्दन श्रीराम का भजन करते हैं ।

(२३)

विशुद्ध भावयुक्त शुद्धान्तःकरण प्रबल पराक्रमी अपने सहोदर लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न से परिसेवित भगवान् श्रीराम जो सभी को अतिशय प्रिय लगते हैं ऐसे परमप्रिय उन भगवान् श्रीराम की अपने हृदय में हम निरन्तर भावना करते हैं ।

(२४)

संसार चक्र की नाना व्यथाओं का निवारण करने वाले, शरणागतजनों एवं दुःखीजनों के कष्टहर्ता, सुख प्राप्ति के एकमात्र अधिष्ठान शरणागतजनों को अतिप्रिय लगने वाले, रसेश्वर श्रीहरि परम प्रभु कौशल्यानन्दवर्धन श्रीराघवेन्द्र को [illegible] करते हैं ।

(२५)

सुमनोहरचित्रकूटगं प्रभजे श्रीनिधि–सीतया सह ।
वसुधाविपदाहरं परं रघुनाथं नितरां सुधाकरम् ॥

(२६)

मिथिलाऽऽश्रवने विराजितं खगवृन्दावलि-नादहर्षितम् ।
श्रुतिशास्त्रसुधीगिरा स्तुतं रघुनाथं सततं हृदा भजे ॥

(२७)

शरणागतभक्तरक्षणे बुध–योगीजन – तापवारणे ।
कटिबद्धयुतं निरन्तरं प्रभजे श्रीजनकात्मजा–प्रियम् ॥

(२८)

श्रीरामभक्तिदो गेयो जानकीवल्लभस्तवः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ॥

(२५)

अति रमणीय चित्रकूट की परम पवित्र स्थलो पर दिव्य-प्रभायुत श्रीसीताजी सहित विहार करने वाले इस भूतल पर आने वाले कष्टों के निवारक, रसालय अर्थात् आनन्द के धाम परात्पर जानकीजीवन भगवान् श्रीराम को प्रणाम करते हैं।

(२६)

मिथिला को सुरम्य भूमि पर आमों के सुन्दर उपवन (बगीचा) में विराजमान, विविध पक्षीगणों के मधुर कलरव सुनकर परम प्रमुदित, वेदादिशास्त्रों के विद्वानों की वाणी द्वारा स्तुति किये गये भगवान् रघुनाथ श्रीराम को अपने हृदय से भजते हैं।

(२७)

शरणागत भक्तजनों की सुरक्षा एवं योगी-विद्वज्जनों के कष्ट-निवारण करने में सदा तत्पर तथा जनकसुता श्रीसीताजी के परम प्रियतम राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम का भजन करते हैं।

(२८)

भगवान् श्रीसीताराम की अनन्य पराभक्ति को प्रदान करने वाला, जो मधुर वाद्यों से लय पूर्वक गाये जाने वाले इस जानकी-वल्लभस्तव की हमें निमित्त बनाकर हमारे द्वारा इसकी रचना उन्हीं श्रीसर्वेश्वर की कृपा का प्रसाद है।

श्रीसीताराम-चतुश्श्लोकी

विरञ्चि-भूतेश-महेन्द्रवृन्दै-
वृन्दारकैर्नित्यनिषेव्यमाणम् ।
धनुर्धरं दिव्यशरेण रम्यं
श्रीरामचन्द्रं हृदि भावयामि ॥१॥

श्रीसूर्यवंशप्रभवं रमेशं
राजीवनेत्रं रमणीयकान्तिम् ।
अनन्यभक्तैः सततं प्रपूज्यं
श्रीरामचन्द्रं मनसा भजामि ॥२॥

श्रीजानकीजीवनमुत्तमेशं
साक्षादयोध्यानगरीनरेन्द्रम् ।
अनन्तब्रह्माण्डपतिं वरेण्यं
श्रीराघवेन्द्रं नितरां स्मरामि ॥३॥

अरण्यवास्तव्यमुनीन्द्रवृन्दै-
राराधनीयं रसभक्तिनिष्ठैः ।
दैत्यान्तकं गो-द्विज-देवपालं
श्रीराघवेन्द्रं सततं भजामि ॥४॥

सीताराम-चतुश्श्लोकी सीतारामानुरागदा ।

राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥५॥

श्रीसीताराम – चतुश्श्लोकी

ब्रह्मा-शिव-इन्द्रादि देववृन्दों द्वारा सर्वदा परिसेवित धनुष को धारण किये हुए दिव्यवाण से सुशोभित भगवान् श्रीरामचन्द्र की अपने अन्तःकरण में भावना करते हैं ।।१।।

सूर्यवंश में अवतीर्ण जानकीवल्लभ कमलनयन परमदिव्य शोभा से अतिकमनीय स्वरूप अनन्य-भक्तों के द्वारा अनवरत समर्चनीय भगवान् राघवेन्द्र श्रीराम का अपने अन्तर्हृदय से भजन करते हैं ।।२।।

अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति अयोध्याधीश्वर श्रीजानकी-जीवनवल्लभ परमवरणीय परमेश्वर भगवान् राघवेन्द्र श्रीराम का निरन्तर स्मरण करते हैं ।।३।।

भगवदीय रसमयी पराभक्तिपरायण वन--प्रदेश में सतत निवास करने वाले ऋषि-मुनिजनों द्वारा जो आराधनीय हैं असुरों का दमन करने वाले देव–गो–विप्रों की रक्षा में अभिनिरत भगवान् राघवेन्द्र श्रीराम का भजन करते हैं ।।४।।

भगवान् श्रीसीताराम के अनन्य अनुरागात्मिका पराभक्ति को प्रदान करने वाले इस "श्रीसीताराम-चतुश्श्लोकी" स्तोत्र की रचना उन्हीं सर्वेश्वर के कृपा-प्रसाद से सम्पन्न हुई जो भक्तों के लाभार्थ प्रस्तुत है ।

श्रीरामकृष्ण-युगल संकीर्तन

सीताराम सीताराम, सीताराम जय सीताराम ।
राधेश्याम राधेश्याम, राधेश्याम जय श्यामाश्याम ।।

अवधविहारी अतिसुखकारी, अघघनहारी सीताराम ।
कुञ्जविहारी व्रजवनचारी, रासविहारी श्यामाश्याम ।।

दशरथनन्दन शोभितचन्दन, असुरनिकन्दन सीताराम ।
व्रजजनजीवन विहरतकुञ्जन, नलिनविलोचन श्यामाश्याम ।

जलधरसुन्दर मुदितमनोहर, सुभगधनुषधर सीताराम ।
वेणु-लकुटकर कटिपीताम्बर, मोरमुकुटधर श्यामाश्याम ।।

अतिसुकुमारा सबसुखसारा, परमअधारा सीताराम ।
सदा उदारा केलि अपारा, रस अवतारा श्यामाश्याम ।।

मन अभिरामा मञ्जुल नामा, अवध विरामा सीताराम ।
मंगल धामा मनमथकामा, मोहितवामा श्यामाश्याम ।।

भुव निसतारा वन संचारा, संत निहारा सीताराम ।
'शरण' पियारा विपिनविहारा, सखिहियहारा श्यामाश्याम ।।

-:- श्रीराघवेन्द्राष्टक -:-

अम्बुजलोचन रामचन्द्र, अघहर परम उदार ।
"राधासर्वेश्वरशरण" महिमा-सुयश अपार ॥१॥

सुरम्य सरयू-तीर पर, विहरत सीताराम ।
"राधासर्वेश्वरशरण", दरशन शुभ अभिराम ॥२॥

परम कृपानिधि जानकी,-जीवनवल्लभलाल ।
"राधासर्वेश्वरशरण", दरशन करत निहाल ॥३॥

रूपसुधा-रससिन्धु है, राघव-श्रीमुखचन्द्र ।
"राधासर्वेश्वरशरण" ध्यावत मुनि निस्तन्द्र ॥४॥

अशरण शरण-करुणानिधि, रसमय मञ्जुलधाम ।
"राधासर्वेश्वरशरण" अवध सुशोभित राम ॥५॥

अतिशोभित कर कमल-धनु, असुर संहारत राम ।
"राधासर्वेश्वरशरण" रसिक भक्तजन काम ॥६॥

दशरथनन्दन राम की, जय बोलो अविराम ।
"राधासर्वेश्वरशरण" रुचिर अयोध्या धाम ॥७॥

शरणागत रक्षा-निरत, कौशल्या-सुत राम ।
"राधासर्वेश्वरशरण" अविचल भज निष्काम ॥८॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

द्वारा विरचित ग्रन्थ-माला

क्रम	ग्रन्थ	विधा		श्लोक सं.
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत "प्रातः स्तवराज" पर 'युग्मतत्त्वप्रकाशिका' नामक संस्कृत व्याख्या			श्लोक सं.
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	प्रकाशित	११८
३.	उपदेश-दर्शन	[हिन्दी-गद्यात्मक]		
४.	श्रीसर्वेश्वर सुधा-बिन्दु-[पद सं० ११८]		,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	३८२
६.	श्रीराधामाधवशतकम्	,,	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज सौरभम्	,,	,,	५८
८.	हिन्दु संघटन	[हिन्दी-गद्यात्मक]	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	१३५
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः	,,	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः	,,	,,	४०
१२.	श्रीहनुमन्महाष्टकम्	,,	,,	२२
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्	,,	,,	१४
१४.	भारत कल्पतरु [पद सं० १४६]		,,	
१५.	श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्	,,	,,	६५
१६.	विवेक-वल्ली [दोहा सं० ४०६]		,,	
१७.	नवनीतसुधा	[संस्कृत-गद्यात्मक]	,,	
१८.	श्रीसर्वेश्वरशतकम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	१०८
१९.	श्रीराधाशतकम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	१०३
२०.	श्रीनिम्बार्कचरितम्	[संस्कृत-गद्यात्मक]	,,	
			कुल श्लोक संख्या	१३३६

मुद्रक— श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)